SHIV SHAKTI

International Journal in Multidisciplinary and Academic Research (SSIJMAR)

Vol. 11, No. 5, November 2023 (ISSN 2278 – 5973)

स्वामी रामकृष्ण परमहंस का दर्शनशास्त्र एवं नव–वैदान्तिक विचार

रितु
पीएच०डी० शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

डा० नितिन
सहायक प्रवक्ता, शिक्षा संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

सार

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के द्वारा प्रस्तुत दर्शनशास्त्र और नव–वैदान्तिक विचार सम्पूर्ण मानवता के लिए एक महत्त्वपूर्ण संदेश लेकर आते हैं। उन्होंने हमें धर्म की एकता और समरसता का महत्त्व बताया है। उनके विचारों में विविधता की समृद्धि, सभी धर्मों के माध्यम से ईश्वर के प्रति भक्ति का मार्ग, और आत्मा के साक्षात्कार की महत्ता को जोर दिया गया है। उनके द्वारा प्रदत्त विचार और सिद्धांतों में सभी मानवता को समर्पित होने की भावना है, जो हमें एकता, शांति, और समृद्धि की दिशा में अग्रसर करती है। उन्होंने सिद्ध किया कि सभी धर्म एक ही ईश्वर की ओर जाने वाले अनेक मार्गों का होते हैं और उनका उद्देश्य एक ही होता है। उनके विचारों और सिद्धांतों का अध्ययन हमें आत्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से समृद्धि प्रदान करता है। यह हमें संवेदनशीलता, समझदारी, और सहानुभूति में वृद्धि करने का मार्ग दिखाता है। उनके संदेशों के माध्यम से हम एक सशक्त, समृद्ध, और सहयोगी समाज की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

कुजी शब्दः दर्शन शिक्षा, भक्ति, आध्यात्म, समाज

भूमिका

स्वामी रामकृष्ण परमहंस एक महान धार्मिक और आध्यात्मिक गुरु थे जिन्होंने 19वीं सदी में भारतीय समाज को उत्तराधिकारी तरीके से प्रेरित किया। उनके दर्शनशास्त्र और शैक्षिक विचार भारतीय समाज को आदर्शवादी और आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इस लेख में, हम स्वामी रामकृष्ण के दर्शनशास्त्र और शैक्षिक विचारों के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

स्वामी रामकृष्ण का जीवन एक गहरे आध्यात्मिक अनुभव के साथ जुड़ा हुआ था। स्वामी रामकृष्ण ने कई धार्मिक साधनाएँ की और विभिन्न धार्मिक दर्शनों को अपनाया, जैसे कि वैष्णव, शैव, तांत्रिक, और इस्लामी धर्म। वे अपने आध्यात्मिक अनुभवों के माध्यम से दिव्यता की ओर अग्रसर हुए। स्वामी रामकृष्ण का एक महत्वपूर्ण दर्शनशास्त्र है, "एकात्मादर्शन" जिसमें वे दर्शाते हैं कि सभी धर्म और मार्ग एक ही सच्चे आत्मा की ओर जाने के लिए हैं। वे यह मानते थे कि सभी धर्म एक ही सत्य की ओर जाने के लिए अलग–अलग मार्ग प्रदान करते हैं, और व्यक्ति के चयन के हिसाब से वे उस मार्ग को चुन सकते हैं जो उनके लिए सही है।

स्वामी रामकृष्ण के दर्शनशास्त्रः

स्वामी रामकृष्ण के दर्शनशास्त्र "एकात्मादर्शन" विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इस दर्शनशास्त्र में वे एकात्मावाद की महत्वपूर्ण सिद्धांतों को प्रस्तुत करते हैं।

आत्मा की एकताः स्वामी रामकृष्ण के अनुसार, सभी धार्मिक और दार्शनिक परंपराएँ एक सामान्य लक्ष्य की ओर जाती हैं, जो है – आत्मा की एकता का अनुभव करना। वे मानते थे कि आत्मा एक ही सच्चे ब्रह्म का अभिवादन है और सभी धर्म इसी ब्रह्म की ओर जाने के लिए मार्ग प्रदान करते हैं। (भट्टाचार्य, 1993)

सभी धर्मों का समान मूलः स्वामी रामकृष्ण के अनुसार, सभी धर्म एक ही सच्चे आत्मा की ओर जाने के लिए हैं और इसलिए सभी धर्मों का मूल समान है। उनका मानना था कि धार्मिक तथा दार्शनिक मार्गों के बावजूद, सबका लक्ष्य एक ही है – आत्मा के उद्धारण और एकता की प्राप्ति।

धर्म और जीवनः स्वामी रामकृष्ण के अनुसार, धर्म को सिर्फ विचारों और शास्त्रों की बात नहीं मानना चाहिए, बल्कि व्यक्ति के जीवन में उसके अच्छे आचरण और आदर्शों के माध्यम से दिखाना चाहिए। वे यह मानते थे कि सही धार्मिक अनुष्ठान और जीवन के साथ जुड़ा होना चाहिए।

ध्यान और साधनाः स्वामी रामकृष्ण ने ध्यान और साधना को आत्मा के साथ मिलने का माध्यम माना। उनका मानना था कि यह धार्मिक साधना के माध्यम से ही आत्मा की ओर बढ़ने का सही तरीका है।

साधक की साधनाः स्वामी रामकृष्ण ने साधक की आवश्यकता को महत्वपूर्ण माना और उन्होंने यह सिखाया कि साधना को ध्यान, आत्म–चिंतन, और आध्यात्मिक अध्ययन के माध्यम से किया जा सकता है।

धार्मिक सहमतिः स्वामी रामकृष्ण का मानना था कि धर्मिक सहमति और सद्भावना को बढ़ावा देना चाहिए। वे सभी धर्मों की समानता और सभी धर्मों के प्रति समर्पण की प्रेरणा देते थे। (भट्टाचार्य, 1993)

स्वामी रामकृष्ण का शिक्षा के प्रति समर्पणः

स्वामी रामकृष्ण ने अपने जीवन के दौरान शिक्षा के प्रति भी विशेष समर्पण दिखाया। उन्होंने अपने शिष्यों को धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान के साथ जीवन के मूल्यों की भी शिक्षा दी। वे यह समझते थे कि शिक्षा सिर्फ ज्ञान का प्राप्त करना नहीं होती, बल्कि व्यक्ति के जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण बनाने में भी मदद करती है। उन्होंने अपने शिष्यों को धर्मिक साधना की महत्वपूर्णता के बारे में सिखाया और उन्हें ध्यान और आध्यात्मिक अध्ययन के माध्यम से आत्मा की ओर बढ़ने का मार्ग दिखाया। (बोधसारानंदख 2006)

स्वामी रामकृष्ण के शैक्षिक दृष्टिकोण का एक अहम हिस्सा था कि उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति के आत्मा के विकास के लिए एक माध्यम माना और इसे धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों के साथ जोड़कर दिया। वे यह मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ

ज्ञान प्राप्त करना नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति के आत्मा के साथ जुड़ा होना चाहिए और उसे उसके जीवन में अपनाना चाहिए।

संसारिक जीवन में आध्यात्मिकता:

स्वामी रामकृष्ण ने आध्यात्मिक जीवन को संसारिक जीवन से अलग नहीं माना। उन्होंने यह बताया कि आध्यात्मिकता को संसार के मध्य में ही अपनाया जा सकता है। उन्होंने यह सिखाया कि संसारिक कर्मों को भी धार्मिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। व्यक्ति को अपने कर्मों को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखने की आदत डालनी चाहिए ताकि वह अपने कर्मों को आत्मा के प्रति अधिक समर्पित और सच्चे भावनाओं के साथ करे। (दिवाकर, 1980)

समाज में सेवा का महत्व:

स्वामी रामकृष्ण ने सेवा का महत्व को भी बताया। उन्होंने यह सिखाया कि आध्यात्मिक जीवन का अभिगम समाज में सेवा करने के माध्यम से होता है। वे सामाजिक सुधार के लिए अपने शिष्यों को प्रेरित किया और उन्हें समाज के उत्थान के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी। स्वामी रामकृष्ण का यह मानना था कि सेवा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने आत्मा को पूरी तरह से विकसित कर सकता है। उन्होंने यह भी सिखाया कि सेवा से आत्मा के साथ अच्छे आचरण और नैतिक गुण की विकास की दिशा में मदद मिलती है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के अनुसार भक्ति की भूमिका

स्वामी रामकृष्ण परमहंस भारतीय 19वीं सदी के प्रमुख आध्यात्मिक नेता और रहस्यवादी थे। उनके शिक्षा और भक्ति (भक्ति) की प्रकृति पर किए गए अंदाज स्वाध्याय में भक्ति के भूमिका को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वामी रामकृष्ण का भक्ति के परिप्रेक्ष्य में दृष्टिकोण, जिसे अक्सर भक्ति योग के रूप में जाना जाता है, इस विश्वास पर आधारित था कि यह दिव्य के साथ एकता प्राप्त करने का मार्ग है। (दासगुप्ता, 2001)

भक्ति की मूल भावनाः स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने जोर दिया कि भक्ति केवल एक धार्मिक अभ्यास नहीं है, बल्कि यह भगवान के प्रति गहरा और पवित्र प्यार और भक्ति है। यह यह एक गहरा भावनात्मक जुड़ाव और दिव्य के प्रति समर्पण है। यह प्यार आधीनिक या धर्मिक रिवाज़ों या सिद्धांतों से बंधा नहीं है, बल्कि यह भगवान की प्रतिष्ठा के लिए एक ईमानदार और निःस्वार्थ इच्छा है।

भक्ति के विभिन्न रूपः स्वामी रामकृष्ण ने विभिन्न प्रकार की भक्ति की पहचान की, जैसे कि वात्सल्य भक्ति (बच्चे के लिए माता–पिता का प्यार), सख्य भक्ति (मित्रों के बीच प्यार), और गोपी भक्ति (भगवान के लिए गोपियों की तरह निःस्वार्थ प्यार और समर्पण)। उन्होंने यह माना कि लोगों के पास विभिन्न प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ होती हैं और वे अपने मन को स्वयं के मन से सहमत अनुसरण करके भगवान के पास पहुँच सकते हैं, जिनके साथ उनके दिल का संवाद हो।

सार्वभौमिक स्वीकृतिः स्वामी रामकृष्ण के शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू था, वे उन्होंने भगवान के पास जाने के सभी मार्गों को स्वीकार किया। उन्होंने अनेक धार्मिक अभ्यासों, जैसे कि हिन्दू धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म को अमूल्यात्मक किया। उन्होंने इस बात की जोरदार मुद्रा की कि विभिन्न धर्म एक जल से जुड़े हुए विभिन्न नदियों की तरह हैं, जो सभी एक ही सागर में जाती हैं, जो है परमात्मा। इस आलोकने ने उनकी शिक्षाओं को सभी जीवन के लोगों और विभिन्न धर्मों के लोगों के लिए पहुँचनीय बनाया। (दासगुप्ता, 2001)

सरलता और ईमानदारीः स्वामी रामकृष्ण मानते थे कि सरलता और ईमानदारी वास्तविक भक्ति के मूल हैं। उन्होंने व्यक्तियों को बच्चों के जैसे दिल से भगवान के पास आने की सलाह दी, जिसमें अहंकार और ढोंग की अभाव होता है। उनके लिए आराधना और विस्तारित अभिषेक आदिक केवल अपने दिल की पवित्रता और भगवान के प्रति अपने प्यार की गहराई के बराबर थे।

समर्पण का महत्वः दिव्यता के प्रति समर्पण स्वामी रामकृष्ण के भक्ति दर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू था। उन्होंने इस जोरदारी की कि एक भक्त को पूरी तरह से भगवान

के पास समर्पित होना चाहिए, जैसे कि एक बिल्ली अपनी मां पर पूरी तरह से निर्भर होती है। यह समर्पण निष्क्रिय नहीं होता, बल्कि दिव्य इच्छा की सक्रिय स्वीकृति और भगवान के मार्गदर्शन में गहरा विश्वास होता है।

भक्ति का जीवन में प्रयोगः स्वामी रामकृष्ण मानते थे कि भक्ति केवल मंदिरों या धार्मिक आयोजनों से सीमित नहीं होनी चाहिए; यह किसी के जीवन के हर पहलू में प्रवेश करनी चाहिए। उन्होंने अपने अनुयायियों को दिनचर्या में भक्ति का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया, सभी जीवों के प्रति प्यार और दया दिखाने का सूचना दिया। दूसरों की सेवा करने और सभी में दिव्य प्रतिष्ठा पहचानने का जीवन उनके लिए भक्ति का सबसे उच्च रूप था। (हर्षानंद, 1996)

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के भक्ति पर शिक्षा लोगों को पूरी दुनिया भर में प्रेरित करते हैं। उनका सार्वभौमिक दृष्टिकोण, सादगी और प्यार और भक्ति को पूर्व मुख्य माध्यम के रूप में प्राप्त करने की जोरदार बात कर रहे हैं, आध्यात्मिक मनचल को गहरा प्रभाव डाल दिया है। उनकी यह मान्यता कि सभी धर्मों की आपसी जड़ों के बारे में और इस विचार का कि अंतिम सत्य को विभिन्न मार्गों से जाना जा सकता है, ने धार्मिक विभाजनों को भूगतान और विभिन्न समुदायों के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देने में मदद की है।

संक्षेप में, स्वामी रामकृष्ण परमहंस की भक्ति पर शिक्षाएँ आध्यात्मिक जागरूकता की दिशा में इसके महत्व को प्रमुख करती हैं। उनका मुख्य योगदान निःस्वार्थ और पवित्र प्यार, समर्पण और इस भक्ति की विश्वस्तता के माध्यमों के रूप में आवश्यकताओं पर गहरा प्रभाव डाल चुका है। स्वामी रामकृष्ण के जीवन और शिक्षा आज भी उन लोगों के लिए प्रकाश की दिशा में खड़ी है, जो भक्ति के मार्ग पर हैं, उन्हें अपने जीवन में दिव्य के साथ गहरा और और मानवीय संबंध को कल्पना करने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के नव–वैदान्तिक विचार

स्वामी रामकृष्ण परमहंस, 19वीं सदी के भारतीय आध्यात्मिक दिग्दर्शकों में से एक थे और उन्होंने राष्ट्र के आध्यात्मिक प्रांगण को पुनः आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी शिक्षाएँ और भक्ति के स्वरूप के प्रति उनके दृढ़ और गहरे दृष्टिकोण आज भी आध्यात्मिक खोजको प्रभावित करते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने भक्ति का महत्व स्पष्ट रूप से बताया कि यह केवल एक धार्मिक अभ्यास नहीं है; यह भगवान के प्रति गहरा और पवित्र प्यार और भक्ति है। यह एक गहरा भावनात्मक जुड़ाव और ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण है। यह प्यार अनुष्ठानों या धर्मिक धारणाओं से बंधा नहीं होता है, बल्कि यह भगवान की उपस्थिति की सच्ची और साहसी तथा पूरी चाह होती है। वे अक्सर अपने जीवन के माध्यम से इस प्यार को प्रकट करते थे, जहां उन्होंने पूजा में रत रहते समय आत्मिक भावनाओं की अत्यंत स्थितियों का अनुभव किया, बाह्य दुनिया की सभी जागरूकता को खो देते थे।

स्वामी रामकृष्ण ने भक्ति की विविधता को मान्य किया और उसे सराहा। उन्होंने समझा कि लोगों की विभिन्न प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ होती हैं और वे भगवान के पास अपने हृदय से मिल सकते हैं, जो उनके दिल को प्राप्त होता है। उन्होंने भक्ति को विभिन्न रूपों में वर्गीकृत किया, जैसे माता–पिता का बच्चे के प्रति प्यार (वात्सल्य भक्ति), दोस्तों के बीच का प्यार (सख्य भक्ति), और गोपियों के द्वारा प्रस्तुत स्वार्थहीन प्यार और समर्पण (गोपी भक्ति)। इस प्रकार के विभिन्न मार्गों की पहचान ने उनकी शिक्षाओं को समावेशी और सभी वर्गों के लोगों के लिए सुलभ बनाया। (भजनान्द, (2013)

स्वामी रामकृष्ण की शिक्षाओं में से सबसे अद्वितीय पहलू में से एक यह था कि वे सभी मार्गों को भगवान की ओर ले जाने की स्वीकृति देते थे। वे सिर्फ प्रवचन नहीं देते थे, बल्कि विभिन्न धार्मिक प्रथाओं, जैसे हिन्दू धर्म, इस्लाम, और ईसाइयत, के अभ्यासों को भी मान्यता देते थे और प्रामाणिक बनाते थे। उन्होंने कई बार कहा कि विभिन्न धर्म भिन्न नदियों की तरह हैं, जो सभी एक ही समुंदर में मिलती हैं, जो भगवान है। इस यूनिवर्सल स्वीकृति के कारण, उनकी शिक्षाएँ सभी धर्मों और पृष्ठभूमियों से आए लोगों को आकर्षित करती थी।

स्वामी रामकृष्ण मानते थे कि सरलता और ईमानदारी सच्ची भक्ति की मूल आधार हैं। वे व्यक्तियों को बिना अहंकार और दिखावे के, एक बच्चे के दिल के साथ भगवान की ओर बढ़ने की प्रोत्साहना देते थे। उन्होंने अक्सर उदाहरण दिया कि बच्चे अपने माता–पिता से बिना किसी आशाओं या गणनाओं के प्यार करते हैं।

दिव्यता के प्रति समर्पण स्वामी रामकृष्ण की भक्ति दर्शनिकता का महत्वपूर्ण हिस्सा था। उन्होंने इसका बलात्कार किया कि भक्त को भगवान के पास पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए, जैसे कि एक बिल्ली जो पूरी तरह से अपनी मां पर निर्भर होती है, जिसके द्वारा उसका पोषण और सुरक्षा होती है। यह समर्पण निष्क्रिय नहीं होता है, बल्कि दिव्य इच्छा की सक्रिय स्वीकृति और भगवान के मार्गदर्शन में गहरा भरोसा होता है। वे मानते थे कि वास्तविक समर्पण मुक्ति और दिव्य से मिलान लेता है। (शर्मा, 2008)

भक्ति की जीवन में महत्वः स्वामी रामकृष्ण की शिक्षाएँ मंदिरों और धार्मिक जनसभाओं की सीमाओं से आगे बढ़ती थीं। वे मानते थे कि भक्ति को व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में घुस जाना चाहिए। उन्होंने अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी दैनिक दिनचर्या में भक्ति का अभ्यास करें, सभी जीवों के प्रति प्यार और सहानुभूति दिखाएं। दूसरों की सेवा करने और सभी में दिव्य प्रतिष्ठा की पहचान करने का जीवन, उनके लिए भक्ति का सबसे उच्च रूप था। उनका जीवन इस सिद्धांत का प्रतिष्ठान देता था, क्योंकि वे अपने पास आने वाले सभी लोगों की सेवा करते थे, उनके पृष्ठभूमि या धारणाओं के बावजूद। (शर्मा, 2008)

संक्षेप में, स्वामी रामकृष्ण परमहंस की भक्ति पर शिक्षाएँ वे लोगों के लिए एक अकालिक मार्गदर्शक के रूप में काम करती हैं जो दिव्य के साथ एक गहरा जुड़ाव ढूंढ रहे हैं। उनका प्रायण केवल और निष्काम प्यार, विश्वासी और सरलता के महत्व, सर्वसामान्य स्वीकृति, और समर्पण के महत्व पर आधारित है, और आज भी आध्यात्मिक खोजको प्रेरित करता है और मार्गदर्शन करता है। स्वामी रामकृष्ण का जीवन और

उनकी शिक्षाएँ भक्ति और प्रेम की शक्ति के प्रमाण हैं, आध्यात्मिक अनुभव और दिव्य के साथ आत्मिक अवबोध और एकता प्राप्त करने के माध्यम के रूप में।

निष्कर्ष

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के जीवन और शिक्षाओं ने दर्शन, शिक्षा और सांस्कृतिक आलोचना के क्षेत्र पर एक अमिट छाप छोड़ी है। प्रत्यक्ष आध्यात्मिक अनुभव और सार्वभौमिकता में निहित स्वामी रामकृष्ण परमहंस का दर्शन, दुनिया भर के विचारकों और विद्वानों के साथ गूंजता रहता है, जिससे वह प्रेरणा और ज्ञान का एक कालातीत स्रोत बन जाते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दर्शनशास्त्र और शैक्षिक विचार भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश हैं। उन्होंने धर्म, जीवन, और शिक्षा के माध्यम से आत्मा की एकता की महत्वपूर्णता को बताया और सामाजिक सुधार के लिए सेवा का महत्व भी जागरूक किया। उनके दर्शनशास्त्र और शैक्षिक विचार हमें सच्चे आध्यात्मिक जीवन की ओर मार्गदर्शन करते हैं और व्यक्ति को अपने आत्मा की खोज में मदद करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

शर्मा, श्रीराम आचार्य (2008). *युग चेतना के सूत्रधार स्वामी रामकृष्ण परमहंस*। मथुराः युग निर्माण योजना।

भजनान्द (2013). *धर्मों की समानताः श्री रामकृष्ण और स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण से*, रामकृष्ण संस्कृति संस्थान, कोलकाताः गोल पार्क।

भट्टाचार्य, हरिदास (संपादक) (1993). *भारतीय संस्कृति की सांस्कृतिक विरासत* (भाग 3)। कोलकाता : रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान।

बोधसारानंद (2006). श्री रामकृष्ण की शिक्षाएं। कोलकाताः ट्रिओ प्रोसेस।

दासगुप्ता, आर.के. (2001). *श्री रामकृष्ण का धर्म* । कोलकाता : रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान।

दिवाकर, आर.आर (1980). *श्री रामकृष्ण परमहंस* । बॉम्बेः भारतीय विद्या भवन।

हर्षानंद (1996). *श्री रामकृष्ण का दर्शनशास्त्र* । बैंगलोर : रामकृष्ण मठ।

पैरागॉन, शिफमैन (1989). *श्री रामकृष्ण, नए युग के एक नबी।* न्यूयॉर्करू पैरागॉन हाउस।